देवी उषासावश्विना। भिषजेन्द्रे सरस्वती। बलं न वाचमास्ये। उषाभ्यां दध्रिन्द्र्यं। वस्वने वस्धे-यस्य वियन्तु यज । देवी जोष्ट्री अश्विना। सुचामेन्द्र सरस्वती। श्रोचं न कर्मयोर्थेशः। जोष्ट्रीभ्यां दध्रि-न्द्रियं। वस्वने वस्धेयस्य वियन्तु यज ॥ २॥

दिवी उर्जाहती दुधे सुदुधे। प्रयसेन्द्रः सरस्वत्य-श्विना भिष्णावत। श्वकं न ज्योतिस्तनयोराहती ध-तद्दियं। वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज। देवा दे-वानां भिष्णा। होताराविन्द्रमश्चिना। वष्ट्कारैः सरस्वतो। त्विषं न हृदये मति। होत्थां दध्रि-व्ययं। वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज॥ ॥ ॥

देवीस्तिसस्तिसे देवीः। सर्स्वत्यश्विना भारती-हा। शूषं न मध्ये नाभ्यां। इन्द्रीय दधुरिन्द्रियं। वसु-वने वसुधेयस्य वियन्तु यजे। देवइन्द्रे। नराश्रश्यः। विवस्त्यः सरस्वत्याश्विभ्यामीयते रथः। रते। न रूप-मस्तं जनिनं। इन्द्रीय त्वष्टाद्धदिन्द्रियाणि। वसु-वने वसुधेयस्य वियन्तु यजे॥ ४॥॥

देवइन्द्रो वनस्पतिः। हिर्ग्यपर्मी अश्विभ्यां। सर्-